सच में यार! टाईम ही नहीं हे|

"ढेरों उम्मीदों के दिये बिछे हे|
पर क्या करे समय ही नहीं हे|
इन्सान बनने के मौके भी कई मिलते हे|
पर क्या करे समय ही नहीं हे|"

कई दिनों से पूछने को जी चाह रहा हे कि,
"सच में यारों, हमारे पास समय ही नहीं हे?"
"ये एक बेहूदा मजाक हे या फिर बस हकीकत को टालने कि कोशिश?"
"हम ईतने व्यस्त रहेते हे कि समय का पता ही नहीं चलता,
या फिर ईतने आलसी कि समय देखने का ठिकाना भी नहीं होता|"

ये पहेली तो बड़ी पेचीदी हे, पर सुलजानी तो अब जरुरत सी बन गई हे|

बचपन में किताबों में पढ़ा था कि,
"समय को मान देना चाहिए| समय-समय पर वोह सारा काम कर लेना चाहिए|"
पर दुनिया के ईस अजीब से चोचले में हम ईतने मशगुल हो गए हे कि समय का पता ही नहीं चलता हे|

बचपन में दोस्तों को मिलने का समय ही समय होता था| और साथ मिलकर कुछ हंगामे कर लेने का मौका भी हमेशा बना रहेता था| पर आज वही दोस्तों को मिलने के लिए समय ही नहीं हे|
माँ-बाप भी अपनी सारी जिंदगी, अपना सारा समय अपने बच्चो कि परवरिश में बिता देते हे| और वही बच्चो को बड़े होकर, अपने माँ-बाप के पास दो वक्त बिताने का समय ही नहीं हे|
खुशनुमा माहोल का कडवा सच तो ये भी हे कि, कई वृद्धाश्रमोमें आज भी हजारो बूढ़े माँ-बाप अपने बच्चों कि राह देख रहे हे| पर अफ़सोस उनको मिलने, दो वक्त समय बिताने का किसीके पास समय ही नहीं हे|

ठीक हे, समज सकते हे, लोग अपने निजी जीवन में बहुत ही व्यस्त होते हे और शायद वोह उनका निजी मामला भी होता हे|
पर बात अगर यहाँ पर ही खत्म होती तो ठीक थी, लेकिन ये क्या?
लोगों को अपने जीवन में कुछ बनने, कुछ कर दिखाने, अपने आप को जान लेने का भी समय नहीं हे?

अब तो ये कोनसी परेशानी हे कि लोग हमेशा अपने जीवन से नाराज रहते हे|
कोई मदत मांगे तो मदत करना तो दूर, पर दो वक्त बात करने का भी समय नहीं हे|
हर वक्त बस एक ही जवाब,
"सच में यार! टाईम ही नहीं हे".....

Sevak

सुना तो मैंने किसी बडे उध्योगपति का कुछ ऐसा था कि, उनके पास टीवी देखने का समय ही नहीं रहेता था क्योंकि उनको देश के लिए कुछ करके, टीवी के माध्यमसे लोगों तक पहुँचना था|

तो मेरे यारो शायद हम सभी के पास उन्हीके जैसे २४ घंटे ही हे|
गौर से देखेंगे तो ईन २४ घंटो में, १४४० मिनिटे, ८६४०० सेकंदे और उसमे आनेवाले अनगिनत पल|
ईन सारे लम्हों को जिंदादिली से जी लेते हे|
बस अब हम ही अपना रास्ता तय कर लेते हे|

बेवजह फ़िज़ूल बहाने देकर जीना हे, या फिर सच में कुछ कर दिखाना हे|
अपने लिए तो ना सही पर दूसरो के लिए तो समय निकाल लेते हे|
और कुछ अगर न भी हो सके तो कोई बात नहीं पर लोगों के चहेरे कि मुस्कान बनी रहे,
ईसलिए ऊपरवाले से दुआ माँगने का दो वक्त का तो समय निकाल लेते हे|

समय तो सच में हे, बस अब उसे निकालकर, उसका सही तरह से ईस्तेमाल करते हे|
ईन सारे लम्हों को ख़ुशी खुशी जी लेते हे|.....

"ऊँची ऊड़ान भरने के लिए तो,
आसमान कि सैर भी कम पड़ती हे|
बाकि बहानो की फ़ौज लिए तो,
हम ऐसेही रोज चल पड़ते हे|"

Sevak